Wada Nirmiti Education Society's
GURUKUL GLOBAL SCHOOL
WORKSHEET

SUB: Hindi
LESSON : बिरजू महाराज से साक्षात्कार
STD: VII
NAME: _____ ROLL No: ____
DATE:

प्रश्न १निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

गाना, बजाना और नाचना- ये तीनों संगीत का हिस्सा हैं। संगीत में लय होती है। उसका ज्ञान आवश्यक है। नृत्य में शरीर ध्यान और तपस्या का साधन होता है। नृत्य करना एक तरह से अदृश्य शक्ति को निमंत्रण देना है-कृष्ण, मेरे अंदर समाओ और नाचो। नृत्य ही नहीं, हमारी हर गतिविधि में लय होती है। घसियारा घास को हाथ से पकड़ कर उस पर हँसिया मारता है और फिर घास हटाता मारने और हटाने की इस लय में जरा भी गड़बड़ी हुई नहीं कि उसका हाथ गया। लय हर काम नृत्य में, जीवन में संतुलन बनाए रखती है। लय एक तरह का आवरण है, जो नृत्य को सुंदरता प्रदान करती है। अगर नर्तक को सुर-ताल की समझ है तो वह जान पाएगा कि यह लहरा ठीक नहीं है। इसके माध्यम से नृत्य अंगों में प्रवेश नहीं करेगा।

१ संगीत के तीन हिस्से कौन-से हैं?

(क) खेल, कला, नाचना

(ग) भागना, लिखना, नाचना

(ख) लेखन, गाना, बजाना

(घ) गाना, बजाना, नाचना

२ संगीत में कौन-सी चीज प्रमुख होती है?

(क) संयम

(ख) लय

(ग) स्मरण

(घ) लेखन

३ नृत्य किसका निमंत्रण माना गया है?

(क) अदृश्य शक्ति का

(ख) कलाकार का

(ग) दर्शक का

(घ) श्रोता का

४ लय क्या है?

(क) संगीत

(ख) कला

(ग) आवरण

(घ) नृत्य

Scanned with OKEN Scanner

५ उचित सुर-ताल से नृत्य कहाँ प्रवेश करता है?

(क) मस्तिष्क में

(ख) शरीर के अंगों में

(ग) हाथों में

(घ) गाने में

प्रश्न २लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर।

प्रश्न १ बिरजू महाराज ने अपनी बेटियों के संबंध में क्या निर्णय लिया और क्यों?

उत्तर- बिरजू महाराज ने अपनी बेटियों को कथक सिखाया, क्योंकि उनका मानना था कि लड़कियों के पास शिक्षा या कोई न कोई हुनर अवश्य होना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें। उनका मानना था कि हुनर ऐसा खज़ाना है, जिसे कोई नहीं छीन सकता और वक्त पड़ने पर काम आता है।

प्रश्न २ बिरजू महाराज ने किस प्रकार अपने पिता से कथक की तालीम लेनी शुरू की ?

उत्तर - कथक की तालीम शुरू करते समय गुरु-शिष्यों को गंडा (ताबीज़) बाँधते हैं और शिष्य गुरु को भेंट देता है। जब बिरजू महाराज ने अपने पिता से गुरु रूप में तालीम देने की बात की तो उनके पिता ने कहा, कि भेंट मिलने पर ही वे गंडा (ताबीज़) बाँधंगे, तब बिरजू की माताजी ने उनके कार्यक्रमों की कमाई बाबूजी को भेंट के रूप में दी।

प्रश्न ३ बिरजू महाराज को किस प्रकार चित्रकारी का शौक लगा?

उत्तर- बिरजू महाराज की बेटी-दामाद चित्रकार हैं, उन्हें देख-देखकर पेंटिंग बनाने का शौक उन्हें भी हो गया। वे प्रायः रात बारह बजे के बाद चित्र बनाने बैठते और जब नींद में आँखे बंद होने लगती तो ब्रश को एक तरफ रखकर सो जाते। उन्होंने दो वर्षों में लगभग सत्तर चित्र बनाए थे।

प्रश्न ३ दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोतर

प्रश्न १"अगर मैं नर्तक न होता तो शायद इंजीनियर होता" बिरजू महाराज ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- बिरजू महाराज ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उनका मशीनों में बहुत मन लगता था। कोई भी मशीन या यंत्र खोलकर उसके कल-पुर्जे देखने की जिज्ञासा होती थी। वे अपने ब्रीफकेस में हरदम पेचकस और दूसरे छोटे-मोटे औजार रखते थे। वे अपना पंखा, फ्रिज व अन्य मशीनें भी स्वयं ही ठीक कर लिया करते थे। मशीनों के प्रति अपने लगाव को देखकर उन्हें लगता था कि यदि वे नर्तक न होते तो शायद इंजीनियर होते।

प्रश्न २ 'कथक' और भरतनाट्यम में क्या अंतर है?

उत्तर- कथक की भाव-भंगिमा दैनिक जीवन से ली गई है और भरतनाट्यम में मूर्तिकला से। भरतनाट्यम में दोनों भावों का इकट्ठा प्रयोग होता है और कथक में बारी-बारी से। ओडिसी और मणिपुरी में कोमलता है, कथकली में ओज है। कथक में दोनों हैं। कथक में गर्दन को हल्के से हिलाया जाता है। चिराग की लौ के समान। इसी प्रकार उँगलियाँ भी धीरे-धीरे हिलाई जाती हैं।

प्रश्न ३ पहले समय में नर्तक कथा के दृश्यों का कैसा वर्णन करते थे?

उत्तर- पहले नर्तक कथा के दृश्यों का ऐसा विस्तृत वर्णन करते थे कि दर्शक के सामने पूरा दृश्य खिंच जाता था- कि कैसे गोपियों ने घड़ा उठाया, धीमी चाल से पनघट की ओर चली, पीछे से कृष्ण चुपचाप आए, कंकड़ उठाया और दे मारा। अब सिर्फ 'पनघट की गत देखो' कहकर बाकी दर्शक की कल्पना पर छोड़ दिया जाता था।

Scanned with OKEN Scanner